कथा

संस्थापक - मार्कण्डेय

मार्च 2026

स्थापना वर्ष : 1969
अंक 26, मार्च 2026

कथा

ISSN : 2277-856x

स्थापना वर्ष	:	**1969**
संस्थापक	:	**मार्कण्डेय**
प्रबन्ध सम्पादक	:	**स्वस्ति सिंह**
सम्पादक	:	**दुर्गा सिंह, सस्या नागर**
सह-सम्पादक	:	**विष्णु प्रभाकर**
आवरण डिज़ाइन	:	**अंकुर**
संगणकीय अक्षर रचना	:	**अमन कम्प्युटर,** प्रयागराज-16
मुद्रक	:	**भगवती प्रिण्टर्स**, प्रयागराज-3
विधिक सलाहकार	:	**सौमित्र सिंह**
न्याय क्षेत्र	:	इलाहाबाद
प्रकाशक	:	**कथा प्रकाशन** 60-सी, थार्नहिल रोड, शक्ति विहार कॉलोनी सिविल लाइंस, प्रयागराज-1
इस अंक का मूल्य	:	रु. 100/- (एक सौ रुपये मात्र)
सम्पर्क	:	द टैमरिन ट्री, 60-सी, शक्ति विहार कॉलोनी, थार्नहिल रोड, सिविल लाइंस, प्रयागराज-1
दूरभाष	:	09451870000,09415207340
ईमेल	:	kathaprakashan1969@gmail.com

इस अंक में छपे लेखों व लेखकों के विचार से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं।
सभी पद अवैतनिक

अनुक्रम

आमुख

चींटी, ततैया और इन्सान : **मार्कण्डेय** 5

पूर्व-सम्पादकीय

नेहरूयुगीन साँचे में ढले एक इतिहासकार : **भावुक** 7

कहानी

पहली ईंट : अनिता गोपेश 29
घुँघराले बोल : हंसा दीप 34

स्मरण : नीलकांत

सत्यकामी नीलकांत, बहुआयामी नीलकांत : मोहन लाल यादव 39

शिक्षा

नयी शिक्षा नीति : कमलानंद झा 45

कविताएँ

विवेक निराला 52
रवि प्रकाश 58
देवेश पथ सारिया 63

यिद्दिश कहानी

मूर्ख गिम्पेल : अनु. सुशांत सुप्रिय 65

समसामयिक/विचार-विमर्श

सदी की पहली चौथाई : **गोपाल प्रधान** 80
एआई का साम्राज्य : सत्ता और पूंजी की होड़ : **शुभनीत कौशिक** 93

रंगमंच/रंग-प्रक्रिया

रचना प्रक्रिया : नाट्य प्रयोग 'फ़रेब-ए-हस्ती' : **प्रवीण शेखर** 98

एक कहानी

घिग्घियाँ : **तसनीफ़ हैदर** 107

लेख

आज का जीवन - आज की कविता व लोकगीत : **रामकली सराफ** 122

उड़िया कहानी

काँच की गुड़िया : मूल—**डॉ. गौरहरि दास** 139

चर्चित कृति

अगम बहे दरियाव : उपन्यास के शिल्प में 'दुनिया बदलने का खेला' : **रामायन राम** 148

पुस्तक-समीक्षा

सावित्रीबाई फुले के व्यक्तित्व को आलोकित करता... : **आलोक कुमार श्रीवास्तव** 156
मार्कण्डेय चुनी हुई कहानियाँ : **सुजीत कुमार सिंह** 162

चींटी, ततैया और इन्सान

मार्कण्डेय

जेठ की तपती-तड़पती धूप,
ओरी के तले की छाँव
खस की टट्टियों से चू रहे जल-बिन्दु
परिचर्या-निरत, काले-कलूटे, दास बालक की
लगन के तुहिन-तम परिणाम,
थकन-उमस ऊब-तन्द्रा से विवश,
जो ले रहा है झपकियाँ :
चींटी-ततैया साथ, दोनों मौन
प्यासी, डोलतीं, उड़ती, सरकतीं,
पास आतीं हैं, बुझाती प्यास
डर कर सिमटती हैं,
भूल पाती है न लेकिन धूप का यह त्रास :

अन्दर जूतियों की खटपटी आहट
अनंतर मौन का विस्तार
फिर फुफकार
फिर फटकार-
'सुअर सो गया है!
कान गरमाओ, लगाओ लात

खास की टट्टियाँ सूखी पड़ी हैं,
हवा कितनी गर्म-सी आने लगी है...!'
तनिक हट कर
क्षुब्ध चींटी
ततैया संतप्त
दोनों कर रही थीं बात-
'क्या यह आदमी था?
जो हमारे साथ यों बैठा हुआ चुपचाप,
बेबस ऊँघता-सा, तप रहा था,
और बेअन्जाम,
अपनी जाति ही की खा रहा था लात;
- मैं तो काट लेती !
'मैं तो बीन्ह लेती!'

27-2-52

नेहरूयुगीन साँचे में ढले एक इतिहासकार

भावुक

इरफ़ान हबीब
पहिए पर सवार इतिहासकार : एक शहर की अपने इतिहासकार की स्मृतियाँ

स्नातकोत्तर स्तर पर इतिहास में दाखिला लेने पर हबीब साहब की रचनाओं को पढ़ने की जिज्ञासा जगी थी, लेकिन उनकी रचनाओं से सार्थक संवाद कैसे स्थापित किया जाए, यह बुद्धिमत्ता मुझे केवल प्रोफ़ेसर मोहम्मद सज्जाद ने ही प्रदान की—जो मेरे शोध-निर्देशक भी हैं। इरफ़ान हबीब के शिष्य होने के नाते उन्होंने उन्हें बहुत निकट से देखा था और उनकी कक्षाओं के रोचक किस्से सुनाया करते थे। उनसे मिलने वाले किस्से बहुत थे, लेकिन शहर में भी हबीब साहब के बारे में ढेर सारे किस्से प्रचलित हैं।

इरफ़ान हबीब से चाहे किसी के भी वैचारिक मतभेद हों, शहर के हर व्यक्ति की उनके बारे में दो स्थायी छवियाँ हैं। पहली—उनकी सरलता और उम्र की हर बाधा को चुनौती देने वाली जीवटता की अथाह प्रशंसा, जब लोग बताते हैं, कि वे प्रतिदिन साइकिल पर सवार होकर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग आते थे। दूसरी—इस शहर में एक ऐसा इतिहासकार बसता है, जो किसी दुर्भाग्यवश संसार की सारी इतिहास-पुस्तकें नष्ट हो जाएँ तो भी अपनी स्मृति से विश्व का इतिहास पूरी तरह नए सिरे से लिख सकता है।

इन कथाओं के बीच पलते-बढ़ते हुए विश्वविद्यालय में प्रवेश करते ही उस महान

सम्पर्क :
बी-5, ओज़ोन सिटी, महुआ खेड़ा पुलिस थाने के पास, अलीगढ़-202001
मो. : 7060241863